

से 3 साल तक इन फसलों की खेती रोक देनी चाहिए अथवा रोग रोधी किस्मों का व्यवहार करना चाहिए। मटर के फफूंदी रोग नियंत्रण हेतु कैराथेन (0.1%) या सल्फेक्स (0.3%) + इण्डोफिल एम-45 (0.2%) के मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए। तीसी में गोल मीज का प्रकोप होने पर मिथाइल डिपेटोन (10मि.ली./10ली. पानी) या मोनोक्रोडोफास (10मि.ली./10ली. पानी) का छिड़काव करना चाहिए। दलहनी फसलों में फली छेदक नियंत्रण हेतु डेल्टाफेन या डिपेल (1 ग्राम/ली. पानी) या इण्डोसल्फान तरल (1.2 मि.ली./ली. पानी) का छिड़काव करना चाहिए।



उपज

किसान भाई अगर आधार फसल धान जैसा ही पैरा फसल के खेती पर ध्यान दें तो निश्चित रूप से प्रति क्षेत्रफल पैदावार बढ़ेगी। पैरा कृषि अपनाकर काफी कम लागत में निम्नलिखित उपज प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है

तीसी	— 2.5 क्विंटल/एकड़
मसूर	— 1 से 1.5 क्विंटल/एकड़
चना	— 1 से 1.5 क्विंटल/एकड़
छोटी मटर (केरव)	— 3 से 4 क्विंटल/एकड़
खेसारी	— 3 से 4 क्विंटल/एकड़

सावधानियाँ

पैरा कृषि के अन्तर्गत कुछ सावधानियाँ बरतने की आवश्यकता होती है, जैसे :

1. अंकुरण के समय खेत में पानी का जमाव नहीं होना चाहिए। पानी के जमाव से बीज के सड़ जाने का खतरा रहता है। अतः जल निकासी का व्यवस्था करके रखना चाहिए।
2. बीज बोवाई के समय फसल, किस्म तथा मिट्टी के प्रकार पर ध्यान देना चाहिए।

3. आधार फसल के बोवाई के समय ही पैरा खेती के लिए भी योजना बना लेना चाहिए।
4. आधार फसल मध्यम अवधि वाली उन्नत किस्म की होनी चाहिए।
5. आधार फसल का कटाई पैरा फसल को बचाते हुए बड़ी सावधानी से की जानी चाहिए।
6. चना तथा खेसारी जैसी पैरा फसल की शीर्षक शाखाओं को तोड़ देना चाहिए।

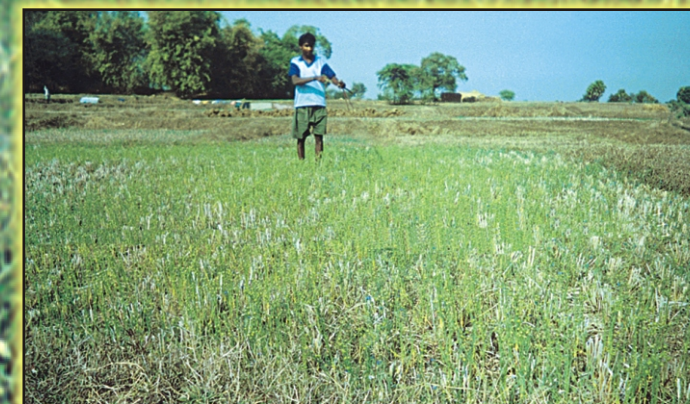
पैरा खेती से लाभ

पैरा खेती के निम्नलिखित लाभ हैं —

1. पैरा कृषि अन्य दोहरी कृषि पद्धतियों से कम लागत वाली सस्ती कृषि पद्धति है।
2. इस कृषि पद्धति से खेत में मौजूद नमी का पूर्ण उपयोग हो जाता है।
3. कम लागत से ही दलहन तथा तिलहन का अतिरिक्त उपज प्राप्त होता है। अर्थात् अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।
4. पैरा कृषि के अन्तर्गत दलहनी फसलों के खेती से मिट्टी में नेत्रजन की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे किसान को अनुवर्ती अन्य फसल के खेती में नेत्रजनीत खाद की कम मात्रा देनी पड़ती है।
5. तेलहनी फसलों से खल्ली के रूप में कार्बनिक खाद की प्राप्ति होती है।
6. पैरा कृषि की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि रबी मौसम में जो खेत परती पड़ा रहता है उसका समुचित उपयोग हो जाता है।



पैरा कृषि कम लागत से ज्यादा आमदनी



डॉ० डब्ल्यू आईन्द एवं डॉ० मोती राम
राष्ट्रीय कृषि प्रौद्योगिकी परियोजना
(आर.आर.पी.एस.-34)

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दुमका
(बिरसा कृषि विश्वविद्यालय)



हमारे देश में सदियों से दोहरी फसलोत्पादन की अनेकों कृषि पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। इनमें से बहुत ही प्रचलित तथा महत्वपूर्ण कृषि पद्धति है – **पैरा कृषि** या **वेगबद्ध खेती**। आधार फसल के कटनी से पूर्व अन्य फसल की बोआई आधार फसल के खड़ी खेत में करना ही **पैरा कृषि पद्धति** या **वेगबद्ध** कहलाता है तथा अनुवर्ती फसल पैरा फसल कहलाता है। इस कृषि प्रणाली का मुख्य उद्देश्य खेत में मौजूद नमी का उपयोग अनुवर्ती पैरा फसल के अंकुरण तथा वृद्धि के लिए करना है।

झारखण्ड जैसे क्षेत्रों में जहाँ की कृषि वर्षा पर आधारित है तथा सिंचाई के सीमित साधन के कारण रबी मौसम में खेत परती पड़ी रहती है वैसे क्षेत्रों के लिए पैरा कृषि एक उपयोगी विकल्प हो सकता है। पैरा कृषि पद्धति से प्रायः सभी किसान परिचित होंगे, लेकिन इनसे जुड़े वैज्ञानिक पहलुओं तथा आधुनिक जानकारीयों के अभाव के कारण उनका पैदावार काफी कम है। अतः पैदावार बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक तरीकों तथा जानकारीयों का व्यापक उपयोग अति आवश्यक है।

जमीन का चुनाव

पैरा खेती के लिए केवाल या मटियार दोमट जैसी भारी मिट्टी उपयुक्त होती है। अतः मध्यम तथा निचली जमीन



(दोन) का चुनाव करना चाहिए। भारी मिट्टी में जलधारण क्षमता अधिक होती है साथ ही काफी लम्बे समय तक इस मिट्टी में नमी बरकरार रहती है। टांड या उपरी जमीन पैरा खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है क्योंकि यह जल्दी सूख जाती है।

फसल का चुनाव

आधार फसल तथा अनुवर्ती पैरा फसल के बीच समय का सामंजस्य अति आवश्यक है। दोनों फसलों के बीच समय का तालमेल इस तरह से हो कि हथिया नक्षत्र में पड़ने वाली वर्षा



का लाभ दोनों फसलों को मिले साथ ही पैरा फसल को वृद्धि के लिए पर्याप्त समय भी मिले। अतः आधार फसल के लिए मध्यम अवधि वाली अर्थात् 120 से 125 दिनों में पकने वाली उन्नत प्रभेद का चुनाव करना चाहिए। लम्बे अवधि वाले आधार फसल का चुनाव करने से पैरा फसल को वृद्धि के लिए कम समय मिलता है तथा नमी के अभाव के कारण उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस पटारी क्षेत्र में धान ही मुख्य फसल है इसलिए धान को आधार फसल के रूप में लिया जा सकता है। धान की उन्नत तथा मध्यम अवधि वाली किस्में जैसे— आई. आर.-36, आई. आर.-64, बिरसा धान-202, पूसा बासमती इत्यादि की खेती खरीफ में आधार फसल के रूप में की जानी चाहिए। पैरा फसल के रूप में तीसी, मसूर, चना, मटर, खेसारी इत्यादि का चुनाव किया जा सकता है।

बीज दर

पैरा फसल के लिए बीज दर उस फसल के सामान्य अनुशंसित मात्रा से डेढ़ गुणा अधिक होता है। उदाहरण के लिए तीसी का अनुशंसित बीज दर 8 किलो प्रति एकड़ है। पैरा खेती हेतु 8 किलो का डेढ़ गुणा (1.5) अर्थात् 12 किलो तीसी प्रति एकड़ चाहिए। प्रति क्षेत्रफल पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत किस्मों का चुनाव अत्यन्त जरूरी है।

आधार फसल धान तथा पैरा फसलों के उन्नत किस्में तथा बीज दर

आधार फसल धान की किस्में	पैरा फसल	पैरा फसल की किस्में	बीज दर (किलो/एकड़)
आई. आर.-36	तीसी	टी.-397, शुभ्रा	12
आई. आर.-64	मसूर	बी.आर.-25, पी.एल-406	18
बिरसा धान-202	चना	पन्त जी.-114, सी.-235	45
पूसा बासमती	छोटा मटर (केरव)	रचना, स्वर्णरेखा	48
एम.टी.यू.-7029	खेसारी	रतन, पूसा-24	36

कब और कैसे लगाएं

धान में पचास प्रतिशत फूल आने के दो सप्ताह बाद अर्थात् अक्टूबर के मध्य माह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह के बीच पैरा फसल का बोआई छोट कर करना चाहिए। बोआई के समय खेत में पर्याप्त नमी होना चाहिए। नमी इतनी होनी चाहिए की बीज गीली मिट्टी में चिपक जाए। जहाँ ध्यान दें कि खेत में पानी अधिक न हो अन्यथा बीज सड़ जाएगी। आवश्यकता से अधिक पानी को निकाल दें। जल निकासी का उचित व्यवस्था रखें।



खाद एवं उर्वरक

दलहनी फसलों में नेत्रजन (नाइट्रोजन) की आवश्यकता पौधे के प्रारम्भिक अवस्था में ही होती है। अतः यूरिया 2 किलो, डी.ए.पी. 20 किलो तथा पोटाश 6 किलो प्रति एकड़ बोवाई के समय देना चाहिए। 4 क्विंटल गोबर खाद भी अच्छी तरह से भूरकाव कर देना चाहिए। तीसी या अन्य तिलहनी फसलों के लिए नेत्रजन की अतिरिक्त मात्रा देने की आवश्यकता होती है। अतिरिक्त 10 किलो यूरिया का व्यवहार बोवाई के 20 दिन बाद करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

धान कटनी के 40-45 दिन बाद पैरा फसल में एक निकौनी करना चाहिए। तीसी में खर पतवार नियंत्रण के लिए आइसोप्रोटोरान धूल (25%) का छिड़काव बोवाई के 15 दिनों बाद किया जा सकता है। दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु एलाक्लोर 50 ई.सी. का प्रयोग बोवाई के 2 दिन बाद किया जा सकता है।

पौध संरक्षण

दलहनी फसलों जैसे चना, मटर, मसूर, खेसारी तथा तिलहनी फसल तीसी में उठका रोग होने पर उक्त खेत में 2